

## हरियाणा-पंजाब कृषि विचलन

### चर्चा में क्यों?

हरियाणा की कृषि अपनी **फसल विविधीकरण** के कारण पंजाब से अलग है, जबकि पंजाब में **चावल-गेहूँ की एकल कृषि** पर्यावरणीय और वित्तीय दृष्टि से सतत् नहीं है।

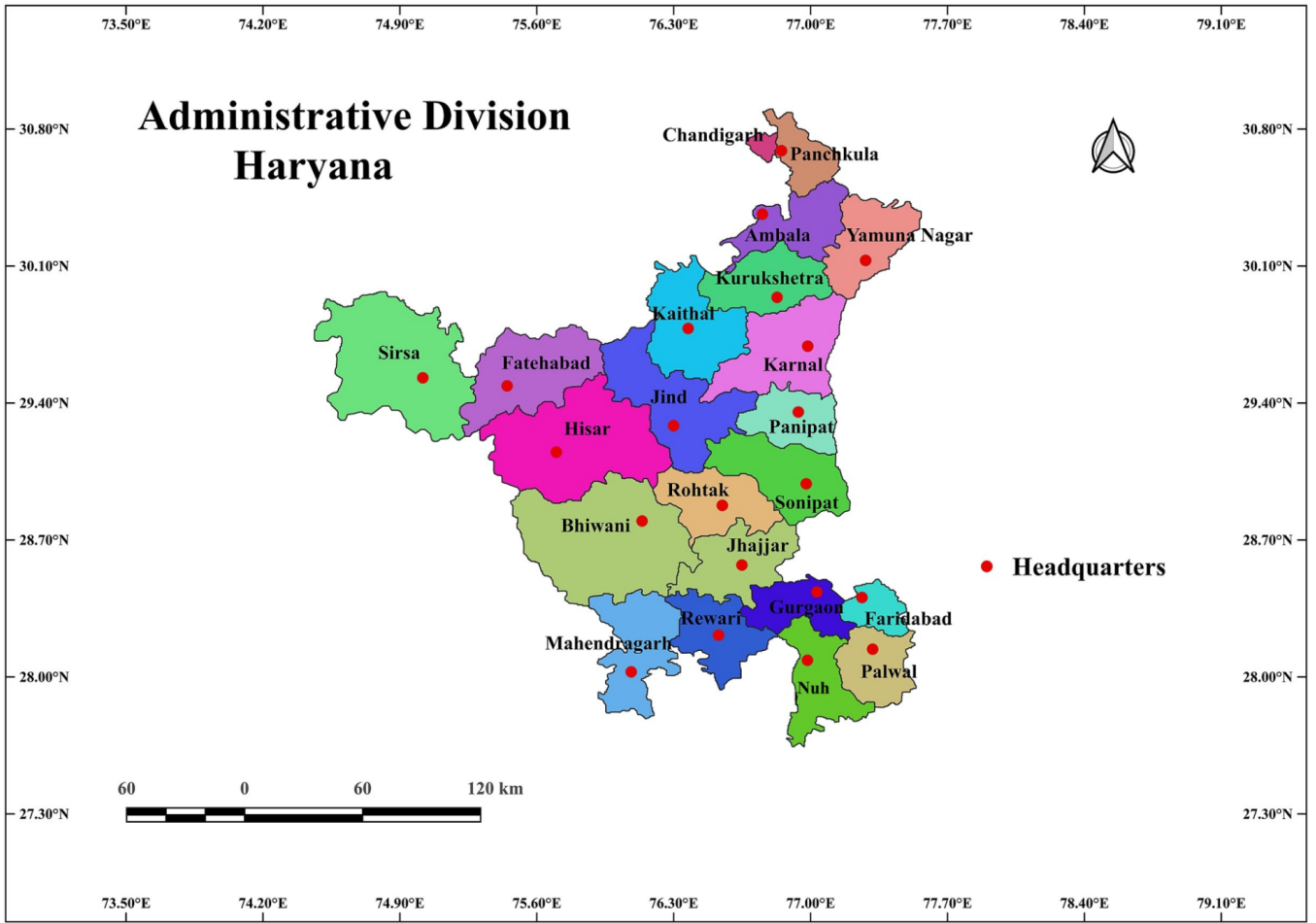
### प्रमुख बिंदु:

#### ■ पंजाब:

- **एकल कृषि फसल:** पंजाब की कृषि की विशेषता **चावल-गेहूँ की एकरूपता** है, जहाँ किसान क्रमशः **खरीफ (मानसून) तथा रबी (सरदी-वसंत) मौसम के दौरान केवल इन दो फसलों को उगाते हैं**।
  - चावल की कृषि का क्षेत्रफल 2014-15 में 28.9 लाख हेक्टेयर (एलाएच) से बढ़कर 2023-24 में 31.9 लाख हेक्टेयर हो गया।
- **उत्पादन रैंकिंग:** पंजाब भारत में गेहूँ और चावल दोनों के उत्पादन में **तीसरे स्थान** पर है।
  - भारत में गेहूँ उत्पादन में आठ प्रमुख राज्य शामिल हैं, जबकि चावल उत्पादन में 16 राज्य शामिल हैं।
- **जल एवं पर्यावरण संबंधी मुद्दे:** चावल एक **जल-गहन फसल** है और इसे लगभग 25 बार संचाईयों की आवश्यकता होती है, जबकि गेहूँ को केवल 4-5 बार की संचाईयों की आवश्यकता होती है।
  - अत्यधिक चावल उत्पादन से **भूजल स्तर में कमी** आती है तथा **अनाज की खरीद और भंडारण की राजकोषीय लागत बढ़ जाती है**।

#### ■ हरियाणा:

- **न्यूनतम एकल कृषि:** हरियाणा में पंजाब की तुलना में अधिक विविधी फसल पद्धति है, जिसमें चावल-गेहूँ की एकल कृषि से परहेज़ किया जाता है।
  - **खरीफ मौसम:** इसमें **चावल, कपास, बाजरा और ग्वार** शामिल हैं।
  - **रबी मौसम:** इसमें गेहूँ, सरसों, चना और सूरजमुखी शामिल हैं।
- **चावल की कसिमें:** हरियाणा में **बासमती चावल** क्षेत्र का 56.2% हिस्सा है (2019-20 से 2023-24)।
  - बासमती चावल **गैर-बासमती कसिमों की तुलना में कम जल की खपत करता है**।
  - बासमती की कृषि जुलाई में की जाती है, जिससे मानसून और ठंडे तापमान का लाभ मिलता है तथा इसकी खुशबू बढ़ जाती है।
- **नहर नेटवर्क: 1,594 चैनलों** का वसित नहर नेटवर्क, **14,814 कमी. लंबा है**।
  - यह हरियाणा के पूर्वोत्तर, मध्य और उत्तर-पश्चिमी जिलों को **संचिति** करता है।
  - दक्षिणी जिलों (चरखी दादरी, झज्जर आदि) में संचाई की सुविधा सीमिति है।
- **फसल वितरण:**
  - **दक्षिणी हरियाणा:** किसान आमतौर पर खरीफ में **बाजरा, ग्वार और ज्वार** तथा रबी में गेहूँ, सरसों, चना एवं **जौ** उगाते हैं।
- **चुनौतियाँ:**
  - **चावल का क्षेत्रफल बढ़ा:** वर्ष 2024 में चावल की कृषि रिकॉर्ड स्तर, 16.4 लाख हेक्टेयर में रोपण।
  - इस वृद्धि के कारण **कपास की कृषि** के क्षेत्रफल में कमी आई है (4.8 लाख हेक्टेयर)।
    - कम कीमतों और **पकि बॉलवर्म कीट के हमलों** के कारण 2023 में कपास का रकबा 6.7 लाख हेक्टेयर से कम हो जाएगा।
- **विविधीकरण प्रयास:** फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिये **भावांतर भरपाई योजना (BBY)** के तहत प्रयास।
  - **बाजरा, सरसों, सूरजमुखी और अन्य फसलों** के लिये **MSP** खरीद एवं मूल्य कमी भुगतान।



PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/haryana-punjab-agricultural-divergence>